जैन विद्या परीक्षाएं संघीय प्रवृति हैः आचार्यश्री महाश्रमण

आंचलिक संयोजक कार्यशाला आयोजित

केलवाः 2 अक्टूबर

जैन विश्व भारती के शिक्षा विभाग समण संस्कृति संकाय द्वारा आज आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य एवं मुनि जयंतकुमार के निर्देशन में जैन विद्या आंचलिक संयोजन कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में आंचलिक संयोजक, केन्द्र व्यवस्थापक एवं विज्ञ उपाधि धारकों के साथ संकाय के अधिकारियों ने तीन सत्रों में कार्यप्रणाली, पाठ्यक्रम, विज्ञ उपाधि धारकों की सहभागिता आदि बिन्दुओं के साथ स्थानीय स्तर पर आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु चिंतन, मंथन किया। संकाय के सहप्रभारी मुनि जयंतकुमार ने परीक्षाओं के नियमों के पालन हेतु सजगता एवं जैन विद्या को व्यापक बनाने में सक्रियता दिखाने का आह्वान किया। विभागाधिपति रतनलाल चोपडा ने केन्द्र की दृष्टि के अनुसार विकास करने की जरूरत बताई। निदेशक पन्नालाल पुगलिया ने संभागियों द्वारा मिले उपयोगी सुझावों को जल्द ही अमलीजामा पहनाने का विश्वास दिलाया। आंचलिक संयोजक रमेश मूथा, अशोक डूंगरवाल ने स्वागत भाषण दिया। कार्यशाला का समापन सत्र आचार्यश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इस सत्र में निदेशक पन्नालाल पुगलिया ने निर्णयों तक पहुंचे बिन्दुओं को प्रस्तुत किया। आचार्यश्री ने फरमाया कि जैन विद्या परीक्षाएं संघीय प्रवृति है। बच्चे और बडे सभी इसमें अध्ययन करते हैं। ध्यान देने की जरुरत है कि विद्यार्थियों के अध्ययन की व्यवस्था अच्छी हो, जिससे सभी को आत्मसंतोष मिले। जो विज्ञ उपाधि धारक है उनको विशेष शिविर के द्वारा पढाने का प्रशिक्षण देकर जैन विद्या प्रशिक्षक बनाया जा सकता है। संकाय द्वारा प्रमाणित इन प्रशिक्षकों को आवश्यकतानुसार क्षेत्रों में अध्ययन कराने के लिए भेजा जा सकता हैं। उपासक वर्ग भी जैन विद्या के अध्यापन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है। महिला मंडल की बहिनें जो तत्वज्ञान का अध्ययन कर चुकी है उनका उपयोग भी हो सकता है। जरूरत होने पर समणीवर्ग को भी भेज सकते है। हमें ज्ञात कराया जाए तो हम इस पर जरूर ध्यान देंगे। यह हमारे घर की गतिविधि है। अन्य पर घ्यान देते है, व्यवस्था होती है तो इसके लिए क्यूं नहीं समणी वर्ग को भेजेंगे। हमें संवत्सरी के आसपास जानकारी मिल जाए। चातुर्मास में सावन भादवे के दौरान साधु–साध्वियों को प्रतिदिन एक घंटे का समय सहजता से मिल सकता है। वे भी इसके अध्ययन पर ध्यान दे सकते है। स्थानीय कार्यकर्ता इस पर

ध्यान दें, साधु–साध्वियों को निवेदन करें। आचार्यश्री ने कहा कि मुनि जयंतकुमारजी जैसी तडप सब में जगनी चाहिए। इसमें जैन विद्या के प्रति तडप है। जब भी अवसर होता है इसके बारे में बताते रहते है।

नए सत्र से लागू होगा अंग्रेजी पाठ्यक्रम

जैन विद्या आंचलिक संयोजक कार्यशाला में चिंतन मंथन के बाद अगले सत्र से जैन विद्या परीक्षाओं के प्रथम तीन वर्षीय पाठ्यक्रम को अंग्रेजी माध्यम में उपलब्ध कराने का निर्णय किया गया। इसके साथ ही जैन विद्या को व्यापक बनाने के लिए पूर्व मिले आचार्यरी महाश्रमण के इंगित को शिरोधार्य करते हुए जैन विद्या प्रसार केन्द्रों को महानगरों में खोलने के लिए सक्रियता दिखाने का संकल्प वयक्त किया गया। इन केन्द्रों पर अत्याधुनिक उपकरणों सहित जैन विद्या के अध्ययन और शोध की सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएगी। परीक्षाओं की गुणवत्ता बढाने के लिए अब अगले सत्र से पिछले वष्र के पाठ्यक्रम से 15 प्रतिशत प्रश्नों को भी समाहित किया जाएगा। इससे विद्यार्थी द्वारा किए गए अध्ययन को कंठस्थ किया जा सकेगा। कार्यशाला में अनेक बिन्दुओं पर निर्णय किया गया।